FOREST RESEARCH CENTRE FOR ECO-REHABILITATION, PRAYAGRAJ

Visit of Dr. K. Sathyanarayana, Director, Central Tasar Research & Training Institute (CTR&TI), Ranchi at FRCER, Prayagraj

A meeting with Dr. K. Satyhyanarayana, Director and Dr J. P. Pandey, Scientist D, Central Tasar Research & Training Institute, Ranchi and Scientists of FRCER, Prayagraj was held on 18th April' 2022 to discuss and explore possibilities of R & D collaborations / MoUs on Tasar sericulture and its host plants to create livelihood opportunities.

Dr Sanjay Singh, Head, FRC-ER Prayagraj presented details of the activities of the Centre. The Scientists of FRCER – Dr. Anita Tomar, Dr. Kumud Dubey, Sri Alok Yadav and Dr. Anubha Srivastava shared their views on existing host plants of Eastern UP and specific sites of their availability. In the meeting, Scientists of both organisations focussed to identify the possible area of research as per the mandate of both organisation.

Dr. K. Sathyanarayana, Director, CTR&RI Ranchi and Dr J.P. Pandey expressed their views and research ideas in creating Tasar based livelihood in the region of Eastern UP on collaborative basis. They also proposed to organise a workshop for developing Tasar based livelihood with joint venture of FRCER, Prayagraj in Lucknow (UP) for addressing new approaches. A joint effort for training of farmers for adopting this Tasar based livelihood will also be initiated involving farmers producers companies and NGOs.

रेशम की खेती को बढ़ावा देने पर मंथन

प्रयागराज (नि.सं.)

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले में रेशम की खेती को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय तसर सिल्क शोध संस्थान, रांची एवं पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज, के बीच सोमवार को बैठक हुई, जिसमें तसर शोध संस्थान, रांची के निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण, डॉ. जे.पी. पाण्डेय, वैज्ञानिक एवं पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज के केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, डॉ. कुमुद दुबे, आलोक यादव एवं डॉ. अनुभा श्रीवास्तव तथा ग्रीन गोल्ड फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के बशारत खान उपस्थित रहे। इस दौरान बताया गया कि झारखंड में तसर रेशम की खेती बड़े पैमाने पर होती चली आ रही है, लेकिन अब संगम नगरी में भी ऐसी खेती की जाएगी, जिससे प्रयागराज के किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार आयेगा। बताया कि किसानों की जागरूकता के लिए एक वर्ष में लगभग 300 किसानों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। किसानों को इसकी बिक्री केंद्रीय तसर सिल्क शोध संस्थान, रांची के माध्यम से करायी जाएगी।

संगमनगरी में किसान करेंगे रेशम की खेती

पहल

- केंद्रीय तसर सिल्क शोध संस्थान की पहल
- पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र के साथ सोमवार को की बैठक

प्रयागराज। जिले में रेशम की खेती को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय तसर सिल्क शोध संस्थान रांची एवं पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज के बीच सोमवार को बैठक हुई। तय हुआ कि अब प्रयागराज में तसर रेशम की खेती की जाएगी।

इससे किसानों को आर्थिक राहत मिलेगा। इस अभियान के तहत 300 किसानों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। तसर रेशम की बिक्री केंद्रीय तसर सिल्क शोध संस्थान रांची के माध्यम से कराई जाएगी। कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि अभी तक झारखंड में तसर रेशम की खेती बड़े पैमाने पर होती रही है। बैठक में तसर शोध संस्थान रांची के निदेशक डॉ के. सत्यनारायण, डॉ. जेपी. पांडे, वैज्ञानिक एवं पारि-पुर्नस्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज के केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, डॉ. कुमुद दुबे, आलोक यादव, डॉ. अनुभा श्रीवास्तव तथा ग्रीन गोल्ड फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के वशारत खान उपस्थित रहे।

संगम नगरी में होगी तसर रेशम की खेती

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले में रेशम की खेती को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय तसर सिल्क शोध संस्थान, रांची एवं पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज के बीच दिनांक 18/04/22 सोमवार को एक बैठक हुई, जिसमें तसर शोध संस्थान, रांची के निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण, डॉ. जे. पी. पाण्डेय, वैज्ञानिक एवं पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज के केन्द्र प्रमुख डॉ संजय सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनीता तोमर, डॉ कुमुद दुबे, आलोक यादव एवं डॉ अनुभा श्रीवास्तव तथा ग्रीन गोल्ड फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के बशारत खान उपस्थित रहे। झारखंड में तसर रेशम की खेती बड़े पैमाने पर होती चली आ रही है। लेकिन अब संगम नगरी में भी तसर की खेती की जाएगी, जिससे प्रयागराज के किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार आयेगा, किसानों की जागरूकता के लिए एक वर्ष में लगभग 300 को प्रशिक्षण दिया जाएगा। किसानों को इसकी बिक्री केंद्रीय तसर सिल्क शोध संस्थान रांची के माध्यम

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा हाईस्कूल परीक्षा वर्ष 1990 अनुक्रमांक 0837114 का मूल प्रमाण पत्र वास्तव में खो गया है।

संगम नगरी में होगी तसर रेशम की खेती

जासं, प्रयागराज : संगम नगरी में पहली बार रेशम की खेती की जाएगी। रेशम की खेती को बढ़ावा देने के लिए सोमवार को केंद्रीय तसर सिल्क शोध संस्थान रांची एवं पारि-पुर्नस्थापन वन अनुसंधान केंद्र के अधिकारियों के बीच बैठक हुई। बैठक में दोनों संस्थाओं के अधिकारियों ने इस खेती को बढ़ावा देने के लिए समझौता पत्र पर सहमति जताई। तसर शोध संस्थान रांची के निदेशक डा के. सत्यनारायण, डा जेपी. पांडेय एवं पारि-पुर्नस्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज के केंद्र प्रमुख डा संजय सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा अनीता तोमर, डा कुमुद दुबे, आलोक यादव एवं डा. अनुभा श्रीवास्तव मौजूद रहीं।

तसर शोध संस्थान रांची के निदेशक डा के. सत्यनारायण ने बताया कि तसर रेशम की खेती बड़े पैमाने पर झारखंड में होती चली आ रही है, लेकिन अब संगम नगरी में भी तसर की खेती की जाएगी। इसके लिए 300 किसानों को प्रशिक्षित किया जाएगा। बताया कि किसानों को रेशम की बिक्री केंद्रीय तसर सिल्क शोध संस्थान रांची के माध्यम से कराई जाएगी।

गंगा की रेती पर रेशम की खेती

जासं, प्रयागराज

- सितंबर में 400 अर्जुन के पेड़ों पर रोपेंगे रेशम कीट
- छह माह में होने लगता है रेशम का उत्पादन, ट्रेनिंग 18 से

कितने प्रकार के होते हैं रेशम

शहतूत रेशम, तसर सिल्क, एरी सिल्क, मुगा रेशम, स्पाइडर सिल्क, मसल्स सिल्क, अनापे रेशम, कायन सिल्क प्रमुख हैं।

तसर रेशम की खेती प्रदेश के प्रयागराज में पहली बार की जाएगी। एक वर्ष में 300 से अधिक किसानों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। सितंबर में रेशम की खेती शुरू हो जाएगी। इसके पहले तीन हजार से अधिक किसानों को लाख की खेती करने का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। जिससे वह अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं।

डा. संजय सिंह, केंद्र प्रमुख, पारिपुर्नस्थापन वन अनुसंधान केंद्र प्रयागराज

गेहूं, धान, जौ, बाजरा आदि जैसी पारंपरिक खेती से किसानों की आय दोगुनी नहीं हो रही है। इसलिए अब किसानों की आय दोगुनी करने के लिए उन्हें व्यवसायिक खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसी क्रम में यहां के किसानों को रेशम की खेती कराने की तैयारी है। इस खेती को करने के लिए 200 किसानों ने रजिस्ट्रेशन करवा लिया है। अब इन किसानों को 18 अप्रैल से खेती करने के टिप्स बताए जाएंगे।

झारखंड में तसर रेशम की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है। अब संगम नगरी में तसर रेशम की खेती की शुरुआत होने जा रही है। सितंबर में पड़िला की एक नर्सरी में लगभग 400 से अधिक अर्जुन के पेड़ों पर रेशम के कीड़ों को छोड़ा जाएगा। रेशम के कीड़ों का प्रबंध केंद्रीय तसर सिल्क शोध संस्थान रांची की ओर से कराया जाएगा। किसानों को इसकी बिक्री के लिए भी परेशान नहीं होना पड़ेगा। किसानों से रेशम की खरीद भी इसी संस्थान के माध्यम से कराई जाएगी।

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले में रेशम की खेती को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय तसर सिल्क शोध संस्थान रांची और पारिपुर्नस्थापन वन अनुसंधान केंद्र के बीच समझौता होने जा रहा है। 18 अप्रैल को तसर रेशम की खेती किस क्षेत्र में की जाएगी इसको परखने के लिए तसर शोध संस्था रांची के निदेशक डा. सत्यनारायण प्रयागराज आएंगे। इसके लिए एक वर्ष में 300 किसानों को प्रशिक्षित किया जाएगा। रेशम की खेती के लिए प्रशिक्षण ले चुके किसानों को अर्जुन के पौधे मुहैया कराए जाएंगे। इसके पहले 1500 से अधिक किसान इसी संस्थान से जुड़कर लाख की खेती कर बेहतर मुनाफा कमा रहे हैं।